नो ब्लेम, नो क्लेम

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

किसी पर दोषारोपण नहीं करना चाहिए। अपना दोष स्वयं देखें। किसी से आवश्यकता से अधिक अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इस सृष्टि में सभी प्राणी मेरे लिए निर्दोष है। यदि मनुष्य अपने आप दोष देखना शुरू कर दे तो दोष समाप्त हो जाए। दोष देखने से कर्म शरीर का घनत्व और बढ़ जाता है। इसलिए दोष दृष्टि नहीं होनी चाहिए। सभी को अपने समान समझना चाहिए। एक ही आत्मा सभी जीवों में है, ऐसा भाव रखना चाहिए। भेद कहीं नहीं है, भेद हमारी बुद्धि में है। कसायी जीवों का वध करता है। पूर्वजन्म में उसने ऐसे भाव डाले थे कि उसे इस जन्म में प्राण हिंसा का कार्य मिला है। ऐसे लोग घोर नरक में जाते हैं। इन्हें सुख शान्ति नहीं मिलती। ऐसे व्यक्तियों को समझाया जा सकता है कि प्राण हिंसा नहीं करनी चाहिए। यदि सद्बुद्धि के कारण वह हिंसा कार्य छोड़कर दूसरा व्यवसाय करने लगता है तो अच्छी बात है। स्व दोष दर्शन से जगत् को निर्दोष समझना चाहिए। कबीरदासजी ने कहा है–

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

अर्थात् सच्चे ह्रदय से यदि बाह्य संसार में देखें तो सब बुराई अपने अन्दर ही नजर आती है। किसी को बुरा देखना यह ठीक नहीं है। अपनी दृष्टि ठीक करनी चाहिए। दोष दूर करने के लिए कार्मण शरीर को शुद्ध करना चाहिए। किसी को बुरा नहीं देखना चाहिए। अपने भीतर विराजमान शुद्ध आत्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि मेरे द्वारा कोई गलत कार्य न हो। राग–द्वेष समाप्त हो जाए। हमारे अन्दर सद्भाव आये। स्वभाव में स्थित होकर विभाव को समाप्त करूं। हमें दूसरों के दोषों को नहीं बल्कि गुणों को देखना चाहिए। दोष दोष को बढ़ाता है।

इस संसार में किसी से अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए। अपने बच्चों को पढ़ा–लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करना हर मॉ–बाप का कार्य होता है। यह

उत्तरदायित्व है। हमें उनसे अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वो हमारी सेवा करेंगे। जीवन में सुख–दुःख प्राप्त होना पूर्वजन्म के कर्मों का परिणाम है। मानव का यह स्वभाव है कि दूसरों के छोटे से अवगुणों को देख लेता है किन्तु पहाड़ के समान बड़े अपने अवगुणों को नहीं देख पाता। इसका मुख्य कारण यह है कि मानव दूसरों के अवगुणों को देखने का आदी हो गया है। आत्म सुधार के लिए स्वयं के दोषों को देखना बहुत आवश्यक है। जब तक मनुष्य अपने दोषों को सुधारेगा नहीं तब तक उसका अन्तःकरण शुद्ध नहीं हो सकता। सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होने के लिए स्वयं के दोषों को देखना आवश्यक है।

मनुष्य को दूसरों के दोषों को देखकर अपने भावों को नहीं बिगाड़ना चाहिए। भाव बिगाड़ने से बन्धन होता है। भाव रूपी बीज के बपन होने से नकारात्मकता आती है। इस सन्दर्भ को दादा भगवान जो आधुनिक युग के एक महान विचारक हैं, उन्होंने अक्रम विज्ञान का महान अवदान समाज को दिया है। दादा भगवान स्वयं कहा करते थे कि यह नाम व्यक्ति का नहीं है, बल्कि अन्तर विराजमान शुद्ध आत्मा ही दादा भगवान है। दादा भगवान को यह ज्ञान हो गया था कि शरीर भिन्न है और आत्मा भिन्न है। जो व्यक्ति शरीर और आत्मा को भिन्न–भिन्न देखता है वह आत्मदर्शी होता है। आत्मा केवल ज्ञान स्वरूप है। आत्मा का स्वरूप सच्चिदानन्द है। जब कर्म रज आत्मा के साथ जुड़ जाते हैं तो आत्मा का स्वाभाविक गुण प्रकट नहीं हो पाता। इसे दूर करने के लिए आत्मा के स्वाभाविक स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है।

मनुष्य जिस चश्में से देखता है, चश्में के रंग के अनुकूल ही दुनिया उसे दिखाई देती है। वस्तु का पारमार्थिक स्वरूप कभी–कभी प्रत्यक्ष से भिन्न होता हे। इसलिए ज्ञान रूपी नेत्रों से देखना बहुत आवश्यक है। मनुष्य को अपने अन्दर विद्यमान शुद्ध आत्मा का दर्शन करना चाहिए। दोष होना मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। यदि मनुष्य में दोष न रहे तो वह भगवान बन जाये। इसलिए मानव को अपने दोषों का ज्ञान होना चाहिए और उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यह प्रयास कई प्रकार से किया जा सकता है। उसमें सेवा धर्म भी एक प्रमुख धर्म है। सेवा तीन प्रकार से की जा सकती है– तन, मन और धन से। तन की सेवा शारीरिक परिश्रम के द्वारा की जा सकती है। मन की सेवा समाज को चिन्तन, मनन, नये विचार और मार्ग दर्शन के द्वारा की जा सकती है। धन से समाज के उन वर्गों के उत्थान के लिए जो धन से

हीन है या जिनके पास पढ़ने–लिखने के साधन नहीं है उनको आर्थिक सहायता देकर सेवा की जा सकती है।

सेवाधर्म बहुत की गूढ़ है। अतः सेवा करने वाले व्यक्ति को नम्रता पूर्वक चाहे व जिस क्षेत्र में हो सेवा का योगदान देना चाहिए। मानव जीवन मे चार तरह के ऋण हैं– गुरु ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण, और समाज ऋण। योगी लोग भी इसके महत्व को नहीं समझ सके। सेवा एक शाश्वतिक धर्म है। सेवा भेद को समाप्त कर देती है। ऊँच–नीच, बड़ा–छोटा का भेद सेवाभाव में नहीं रहता। सेवा एक आंतरिक गुण है। सेवा अहंकार को भी समाप्त कर देती है।